पद

सूरदास

प्रदत्त कार्य-1 : किस्सा संकलन

विषय : बीरबल, तेनालीरामा आदि किसी मनपसंद चरित्र के कुछ किस्सों का संकलन।

उद्देश्य :

- बीरबल, तेनालीरामा के विषय में जानकारी देना।
- खोज परक शैली का विकास करना।
- लेखन कौशल का विकास करना।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. अध्यापक बीरबल, तेनालीरामा आदि के विषय में छात्रों को जानकारी देंगे।
3. छात्रों को इस कार्य के लिए 2-3 दिन का समय दिया जाएगा।
4. छात्र किस्सों का संकलन सचित्र करेंगे/छात्र स्वयं भी चित्रकथा द्वारा प्रसंग प्रस्तुत कर सकते है।
5. निर्धारित दिन छात्र कक्षा में प्रस्तुतीकरण करेंगे।
6. अध्यापक देखेंगे कि इस प्रक्रिया में छात्र रुचिपूर्वक भाग ले रहे हैं अथवा नहीं।
7. मूल्यांकन के आधार शिक्षक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय संबद्धता
- भाषायी दक्षता
- समग्र प्रभाव

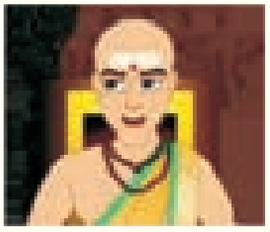

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से किसी अन्य उपयुक्त मूल्यांकन बिन्दु को आधार मान कर अंक विभाजन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- उत्तम प्रस्तुति की कक्षा में प्रशंसा की जाए।
- अध्यापक ऐसे छात्रों का मार्गदर्शन करें, जिन्हें कठिनाई का अनुभव हो रहा हो।
- समय से पूर्व और लघु एवं सार्थक संदेश लिखने वाले छात्रों की प्रशंसा की जाए।

प्रदत्त कार्य-2 : संकलन एवं गायन।

विषय : सूरदास के पद।

उद्देश्य :

- गायन / संगीतात्मकता के प्रति रुझान उत्पन्न करना।
- शब्दों के उच्चारण का ज्ञान कराना।
- ब्रज भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
- खोज परक शैली का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. काव्य रचना पढ़ाने से पूर्व ही अध्यापक छात्रों से सूरदास के पद संकलन की प्रेरणा देगा तथा पदों को पढ़ाते समय गायन शैली समझा देगा।
3. पढ़ाने के पश्चात् यह गतिविधि होगी।
4. दो विद्यार्थियों के समूह बनाए जाएंगे।
5. प्रत्येक समूह के छात्रों को गायन के लिए 1 मिनट का समय दिया जाएगा। दोनों छात्र मिलकर भी पद गा सकते हैं।
6. शिक्षक चाहे तो पद पूरा अथवा चार पंक्तियाँ भी गाने के लिए कह सकते हैं
7. मूल्यांकन के आधार शिक्षक पूर्व में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।
8. इस गतिविधि में एक कालांश का समय लगेगा।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सस्वर गायन
- उच्चारण (लहजा)
- भावाभिव्यक्ति

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वयं मूल्यांकन के आधार निश्चित करने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अच्छा सस्वर गायन करने वाले छात्रों को प्रोत्साहित करें।
- जो विद्यार्थी भाषा का उच्चारण ठीक प्रकार से नहीं कर पा रहे हैं उनको सही उच्चारण का ज्ञान कराएं।

प्रदत्त कार्य-3 : व्याकरण

विषय : सूरदास के पदों में प्रयुक्त अलंकार छाँटिए।

उद्देश्य :

- अलंकारों की पहचान कराना।
- अलंकारों के प्रयोग में प्रवीणता लाना।
- लेखन क्षमता का विकास कराना।
- खोजपरक शैली का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. व्यक्तिगत कार्य।
2. सर्वप्रथम शिक्षक विद्यार्थियों को अलंकार की पूर्ण जानकारी देंगे।
3. छात्र पदों में प्रयुक्त अलंकार छाँटेंगे।
4. छात्र अलंकारो के एक-एक उदाहरण और लिखेगे।
5. मूल्यांकन के आधार बिन्दु अध्यापक प्रारम्भ में ही श्यामपट्ट पर लिख देंगे।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- सही उदाहरण के आधार पर

टिप्पणी :

- अध्यापक स्वतंत्र रूप से किसी अन्य उपयुक्त मूल्यांकन बिन्दु को आधार मान कर अंक विभाजन कर सकते हैं।

प्रतिपुष्टि :

- जिन विद्यार्थियों ने सही अलंकार छाँटे हैं, उनकी प्रशंसा की जाए।

प्रदत्त कार्य-4 : कवि सम्मेलन

विषय : नवरस

उद्देश्य :

- रसों का ज्ञान करवाना।
- साहित्य में वर्णित भिन्न भिन्न प्रकार की भावनाओं को समझना।
- कविता की सौन्दर्यानुभूति कराना।
- विद्यार्थी की श्रवण एवं वाचन क्षमताओं का विकास करना।
- विद्यार्थी की सृजनात्मक क्षमता का विकास करना।

निर्धारित समय : दो कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक पूरी कक्षा को नौ समूहों में विभक्त कर देगा तथा नौ रसों के विषय में सोदाहरण समझाएगा।
2. इस आयोजन की पूर्व तैयारी करनी पड़ेगी अत: एक सप्ताह पूर्व इसकी जानकारी दे दी जाए।
3. अध्यापक विद्यार्थियों को बता दें कि समूह में कुछ विद्यार्थी श्रृंगार, हास्य, वीर, वात्सल्य, रौद्र, करूण, भयानक, वीभत्स, शांत इत्यादि रसों की कविताओं का संकलन करेंगे।
4. समूह का एक विद्यार्थी सबके सामने अपनी कविता का सस्वर वाचन करेगा।
5. अध्यापक इस बात का ध्यान रखें कि सभी रसों का प्रतिनिधित्व अवश्य हो। अत: अध्यापक प्रत्येक समूह को स्वयं रस विशेष वितरित कर दें। कविताएं बहुत लंबी न हों।
6. अध्यापक मूल्यांकन बिन्दु श्यामपट्ट पर पहले ही लिख देगा।
7. कविताएं आधुनिक या प्राचीन किन्हीं भी कवियों की हो सकती है।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- विषय से संबद्धता
- विषय वस्तु
- उच्चारण (भाषा)

- प्रवाह (लय, सस्वर वाचन)
- हाव भाव

टिप्पणी :

- मूल्यांकन आधारों में परिवर्तन करने के लिए अध्यापक स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- कवि सम्मेलन में अपना अमिट प्रभाव छोड़ने वाले विद्यार्थियों की सराहना की जाए।
- संकोची व शर्मीले विद्यार्थियों को आगे आकर बोलने की प्रेरणा व प्रोत्साहन दिया जाए।

प्रदत्त कार्य-5 : मंचन

विषय : श्रीकृष्ण की किसी लीला का मंचन।

उद्देश्य :

- श्रीकृष्ण के जीवन से परिचित कराना।
- अभिनय कला में अभिरुचि उत्पन्न करना।
- मंचन के लिए आवश्यक उपकरणों की महत्ता समझाना।
- काव्य की सौंदर्यानुभूति कराना।
- मौलिक गुणों का विकास करना।

निर्धारित समय : एक कालांश

प्रक्रिया :

1. अध्यापक विद्यार्थियों को समझा दें कि श्रीकृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं में से किसी पर भी मंचन किया जा सकता है। यथा – बाललीला, कालिया नाग लीला, बकासुर वध, गोवर्धन पर्वत, रास लीला, कंस वध, माखन चोरी, द्रोपदी की सहायता, सुदामा मिलन, अर्जुन की मैत्री इत्यादि कोई भी प्रसंग हो सकता है।
2. यह प्रक्रिया सामूहिक होगी।
3. सभी समूह अलग अलग प्रसंगों पर लीला करेंगे।
4. इसकी तैयारी की सूचना एक सप्ताह पूर्व दे दी जाए जिससे विद्यार्थियों को तैयारी का समय मिल जाए।
5. अध्यापक कक्षा के आकार के अनुसार समूह बना सकता है।
6. मूल्यांकन आधार प्रक्रिया के प्रारंभ में ही श्यामपट्ट पर लिख दिए जाएँ।

मूल्यांकन के आधार बिन्दु :

- लीला का चयन
- अभिनय या प्रस्तुति
- संवादों का उच्चारण
- समग्र प्रभाव

टिप्पणी :

- अध्यापक अपनी इच्छानुसार अन्य मूल्यांकन आधार बनाने के लिए स्वतंत्र है।

प्रतिपुष्टि :

- अध्यापक अच्छी प्रस्तुति के लिए विद्यार्थियों की सराहना अवश्य करें।
- अच्छी प्रस्तुति में ज्यादा सफल न होने वाले विद्यार्थियों को उनकी भूल को समझाते हुए बेहतर करने के लिए प्रेरित करें।